परिवर्तन
PARIVARTAN

कृषि संदेश
(रबी विशेषांक)

वर्ष : 2017 | खंड 4 अंक 7 (जुलाई-दिसम्बर) कृषि समुदाय के लिए तक्षशिला की एक पहल

सम्पादकीय

मानसून के देरी से आगमन तथा सितम्बर के मध्य में लौट जाने से किसानो का मनोबल टूट चुका है। बारिस भी कम तथा छिटफुट जगहों पर ही हो रही है। धान की फसल पर्याप्त वर्षा जल के अभाव में काफी प्रभावित हुई है धान की गाभा की स्थिति आने के वाद ही बारिस के बंद हो जाने से किसान पम्प सेट से 4–6 पानी देकर धान की फसल ले रहे है जिससे उसकी लागत भी नहीं निकल पा रही है। समय आ गया है हमें इस बिन्दु पर विचार करना होगा तथा उपरवार वाली जमींन जहा पानी नहीं रुकता है वंहा धान की जगह कम पानी चाहने वाली दलहन, तिलहन तथा मोटे अनाज की खेती करनी होगी। मध्यम अवधि वाली अरहर को जून के तीसरे सप्ताह में बुआई करने पर नवम्बर के आखिरी सप्ताह में कटाई हो जाती है तथा उसके बाद गेंहू की सफलतापूर्वक बुआई की जा सकती है। अरहर के साथ उर्द/मूंग की सहफसली खेती करके अधिक मुनाफा भी कमाया जा सकता है। इस तरह एक साल की धान– गेंहू फसल पद्धति से अरहर– गेंहू की फसल पद्धति (एक साल) उपरवार वाली जमीनों में कम पानी तथा कम लागत में अधिक मुनाफा देने वाली साबित होगी, एक दूसरे विकल्प के रूप में उपरवार वाली जमीनों में सोयाबीन/तिल की खेती भी लाभदायक सिद्ध हो सकती है सोयाबीन तथा तिल काटकर हम गेंहू भी आसानी से ले सकते है। इस क्षेत्र से गन्ना की फसल गायब हो चुकी है गन्ना ऐसी फसल है जो कम अथवा ज्यादा वर्षा जल में अर्थात दोनों ही स्थिति में भी सुगमतापूर्वक उगाई जा सकती है। उपरवार वाली जमीनों में धान की फसल उगाकर लकीर का फकीर बनने में कोई बुद्धिमानी नहीं है आगे भी वर्षा जल का संकट ऐसे ही बने रहने की संभावना है अतः हम फसल पद्धतियों को बदल कर इस संकट का मुकाबला कर सकते है।

किसानो को खेती की नवीनतम ज्ञान देने के लिए हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र कृत संकल्प है। आशा है कि परिवर्तन कृषि सन्देश का यह रबी विशेषांक क्षेत्र के कृषको, प्रसार कार्यकर्ताओं तथा कृषि से जुड़े लोगो के लिए उपयोगी साबित होगा।

डॉ अमरनाथ तिवारी

कृषि मूलश्चः जीवनम्

महिला कृषको के द्वारा सब्जी उत्पादन कार्यक्रम

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के तकनीकी सहयोग से ग्राम बंथो श्रीराम में महिला कृषको द्वारा सब्जी उत्पादन का कार्य 12 महिलाओं का समूह बनाकर प्रारंभ किया गया है यह समूह आत्मा, सिवान के अंतर्गत पंजीकृत भी हो चुका है। इसका उद्देश्य महिला कृषको को आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाना है आय दृव्यय का लेखा जोखा महिलाएं स्वयं रखेगी। महिलाओं को व्यावहारिक ज्ञान देने के दृष्टिकोण से 5 अगस्त,2017 को सब्जी उत्पादन कार्यशाला का आयोजन किया गया। वर्तमान वर्षा की अनिश्चितता तथा खेत खाली न होने की वजह से केवल दो महिलाओ ने प्याज एवं गोभी की रोपाई की इस के साथ ही पालक की बुआई की गयी पालक कट जाने के बाद आलू लगाने का विचार है

महिला कृषको द्वारा फूल गोभी की अगेती प्रजाति सबौर अग्रिम की रोपाई

परिवर्तन परिसर में मौसम वेधशाला स्थापित

परिवर्तन परिसर में भारत मौसम विज्ञानं विभाग, पुणे के सौजन्य से 207वा मौसम वेधशाला का उदघाटन श्री अतुल कुमार सहाय, अतिरिक्त महानिदेशक, मौसम विज्ञानं, पुणे के द्वारा दिनांक 23 अगस्त 2017 को पूर्वान्ह 11 वजे संपन्न हुआ। इस वेधशाला के वनने से सिवान क्षेत्र के कृषको एवं कृषि से जुड़े उद्यमियों को कृषि उत्पादन तथा उनकी गुणवत्ता वढाने में मदद मिलेगी। इस अवसर पर डॉ यन चट्टोपाध्या, उप महानिदेशक, मौसम विज्ञानं, पुणे, डॉ के के सिंह, प्रमुख, कृषि मौसम विज्ञान, नयी दिल्ली, डॉ माली, सतह मौसम विज्ञानं, उपकरण विभाग, पुणे, परिवर्तन संस्था के संस्थापक श्री संजीव कुमार, कार्यकारी निदेशिका सुश्री सेतिका सिंह, श्री यशवंत पराशर, डॉ ए एन तिवारी एवं श्री बलिन्द्र यादव उपस्थित थे। उद्घाटन के पश्चात, सभागार में किसान जागरूकता कार्यक्रम आयोजित की गयी जिसमे 142 किसान तथा कृषि से जुड़े लोगो ने भाग लिया। श्री राजेंद्र कुमार वर्मा,जिला कृषि पदाधिकारी, श्री के के चौधरी उप परियोजना निदेशक, आत्मा, डॉ आर के मालिक है, पटना एवं डॉ आर पी प्रसाद, के वी के, सिवान भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। मौसम आधारित कृषि परामर्श सेवा को प्रभावकारी बनाने पर विस्तार से चर्चा की गयी।

डॉ ए के सहाय, अतिरिक्त महानिदेशक, आई एम डी, पुणे मौसम वेधशाला का उदघाटन करते हुए

परिवर्तन में 7 सितम्बर, 2017 को रबी कार्यशाला आयोजित

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र, परिवर्तन में रबी कार्यशाला दिनांक 7 सितम्बर 2017 को प्रातः 11 बजे आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में कुल 38 किसानो ने भाग लिया सइस कार्यशाला में सूखे की स्थिति पर विशेष रूप से चर्चा की गयी, धान की गाभा तथा दाना भरने की संवेदनशील अवस्था पर नमी बनाये रखने की सलाह दी गयी। विगत कई वर्षो से सूखे की मार की स्थिति से निपटने के लिए फसल विविधिकरण पर जोर दिया गया तथा उपरवार वाली भूमि में धान की जगह पर मध्यम अवधि वाली अरहर ध्सोयाबीन की खेती करने पर वल दिया गया। किसानो ने गत वर्ष हुई जीरो टिलेज से गेंहू की खेती पर संतोष व्यक्त किया तथा औसत रूप से 125 प्रति कठा के हिसाब से वचत वताया। किसानो ने नहर में पानी नहीं आने की स्थिति से क्लब पदाधिकारियों को अवगत कराया।

रबी कार्यशाला में भाग लेते कृषक गण

परिवर्तन किसान क्लब से समय पर उर्वरक,सीड्स एवं कीटनाशक की व्यवस्था बर बल दिया गया।

डीपीएस पटना के छात्र चले किसानो के खेत पर

डीपीएस पटना के छात्र अपने रूरल इमर्जन प्रोग्राम के तहत दिनांक 12 अक्तूबर 2017 को गोठी गाँव में किसान चौपाल में सम्मिलित हुए, किसानो से अपनी जिज्ञासा भरे सवाल पूछे तथा उनके खेतो पर जाकर संकर धान की फसलो को देखा उनसे उनके द्वारा अपनाई जा रही खेती के तौर तरीको पर भी बातचीत की। छात्रो ने किसानो को सहजन के पौष्टिक एवं चिकित्सकीय गुणों की जानकारी दी तथा उनसे हर घर में एक पौधा लगाने की सलाह दी तथा सहजन की पत्ते एवं फली को विभिन्न व्यंजनों में सम्मिलित करने की सलाह दी।

डीपीएस के छात्र गोंठी ग्राम में किसान चौपाल में भाग लेते हुए

सारण तथा सिवान के किसानो को दलहन उत्पादन के गुर सिखाये

आगा खान फाउंडेशन, पटना बिहार के सहयोग से संचालित नव जाग्रति संस्था के कृषि विशेषज्ञ डॉ रामबली सिंह एवं कार्यक्रम प्रवन्धक श्री उपेश दुबे के नेतृत्व में संस्था से जुड़े मांझी, रिविल गंज, सिसवन एवं रघुनाथ पुर क्षेत्र के 100 किसानो का दल 31 अक्टूबर, 2017 को 11 बजे परिवर्तन पहुचा। कृषि सलाहकार डॉ ए एन तिवारी ने सभी का स्वागत करते हुए परिवर्तन के द्वारा किये जा रहे किसानो के खेत पर जीरो टिलेज से गेंहू की खेती, पैडी ट्रांस्प्लान्टर से धान की रोपाई, मेंढ पर अरहर दृमक्का की खेती, धान–गेंहू की प्रजातीय प्रदर्शन, परिवर्तन पाली हाउस में उगाये गए गुणवत्ता वाले सब्जी के पौध तथा कृषि यंत्रो की किसानो के लिए उपलब्ध सुबिधा तथा परिवर्तन किसान क्लब के द्वारा किसानो को बीज,उर्वरक एवं कीटनाशक उचित मूल्य पर दिए जाने की जानकारी दी। तत्पश्चात,डॉ

तिवारी ने सभागार में आगंतुक किसानो को अरहर, चना, मटर एवं मसूर के भरपूर उपज लेने के लिए अनुमोदित प्रजातियों के चुनाव, बीज शोधन, कन्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई, पोषक तत्व प्रवंधन, खरपतवार प्रवंधन,समेकित फसल सुरक्षा के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। अंत में किसानो को बर्हुलिया गाँव ले जाकर श्री बशिष्ट नारायण सिंह के खेत पर आयोजित किये गए प्रदर्शन अरहर UPAS 120 प्रजाति (145 –150 दिन अवधि की) की फसल को दिखाया इस प्रजाति में फूल आ रहे थे तथा इसकी कटाई दिसम्बर के पहले पखवाड़े में की जाएगी तथा गेंहू बोया जाएगा। फसल लाइन में रिज प्लान्टर से मेढ पर बोई गयी है इसे देखकर विभिन्न क्षेत्रो से आये हुए किसानो की समझ तथा उत्साह बढ़ा।

पत्ती लपेटक कीट का नियंत्रण खेत में जाकर बताया

लाछिराम पडरी में किसान चौपाल के दौरान किसानो ने अपनी अरहर के फसल में पत्ती लपेटक कीट के प्रकोप के बारे में अवगत कराया स किसानो के साथ खेत में जाकर फसल का निरीक्षण किया गया तथा किसानो को उसके नियन्त्रण के लिए प्रोनोफोस नामक कीट नाशक की 2 मि. ली. ध्लीटर पानी में मिलाकर छिडकाव करने की सलाह दी गयी। साथ ही साथ अरहर की फसल से अधिकतम पैदावार लेने के लिए शाखा एवं दाना बनते समय सिंचाई तथा फली बेधक के नियंत्रण के लिए कीटनाशको का प्रयोग बताया गया।

डॉ ए एन तिवारी लाछिरम पड़री में अरहर में कीट प्रबंधन बताते हुए

अरहर काटकर गेंहू की बुआई होगी

बर्हुलिया टोला में किसान के खेत पर अरहर न्चै 120 का प्रदर्शन

परिवर्तन कार्य क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले जीरादेई प्रखंड में अरहर की खेती (एकल फसल) बहुतायत से की जाती है स यह फसल जुलाई में बोई जाती है तथा अप्रैल में कटाई होती है अर्थात पूरे साल में अरहर की एक ही फसल किसान ले पाता है अरहर के बाद गेंहू लेने के लिए मध्यम अवधि की अरहर न्चै 120 का प्रदर्शन बर्हुलिया तथा पक्वलिया गाँव में किसानो के खेत पर किया गया है आशा है कि किसान भाई इस प्रदर्शन को देखकर उत्साहित होकर अरहर के बाद गेंहू की भी फसल ले सकेंगे।

मशरूम उत्पादन पर प्रशिक्षण आयोजित

परिवर्तन प्रांगन में स्थित हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र में दिनांक 6 दिसम्बर, 2017 को मशरूम उत्पादन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित की गयी जिसमे कुल 34 लोगो ने भाग लिया। कुल प्रतिभागियों में महिला कृषक सब्जी एवं मशरूम स्वयं सहायता समूह,बंथो श्रीराम की 9 महिला कृषक, महिला समाख्या की सुश्री रूपा जी तथा उनकी 13 सहयोगिनी, संथो गाँव की 10 महिला कृषक एवं 2 पुरुष कृषको ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रशिक्षण देने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र भगवानपुर (सिवान) के प्रोग्राम कोआर्डीनेटर डॉ आर के मंडल एवं वैज्ञानिक डॉ आर पी प्रसाद उपस्थित थे। परिवर्तन के कृषि सलाहकार डॉ ए एन तिवारी ने सभी प्रशिक्षनार्थियों एवं वैज्ञानिको का स्वागत करते हुए इस प्रशिक्षण के उदेश्यों तथा परिवर्तन कार्य क्षेत्र के बेरोजगार युवको,महिला कृषको एवं सीमांत तथा भूमि हीन कृषको के लिए लाभकारी उद्यम बताया। डॉ मंडल ने ओस्टर मशरूम के उत्पादन तकनीक के विभिनन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला तथा यह भी बताया की इसके उत्पादन के लिए मात्र गेंहू का भूसा, मशरूम स्पान एवं

मशरूम उत्पादन तकनीक का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करते हुए महिला कृषक

कवकनाशी/कीटनाशी की आवश्यकता होती है तथा मशरूम का उत्पादन 25 दिनों में प्राप्त किया जा सकता है। डॉ प्रसाद ने पहले मशरूम उत्पाद्न की तकनीक को प्रोजेक्टर के माध्यम से समझाया तत्पश्चात उपस्थित महिला कृषको से गेंहू के भूसा को उबालकर, उसे छानकर उसका शुद्धिकरण करते हुए उसमें स्पान मिलाने का तरीका समझाया तथा कृषको के हाथो से ही सारी प्रक्रिया को संपन्न कराया एवं उनकी प्रश्नों के जबाब दिए इसके उत्पादन में लाभ/हानि का विवरण इस प्रकार है –

- एक किलोग्राम स्पान की कीमत =रु 120/–
- गेंहू का भूसा 10 किलोग्राम =रु 50/–
- भूसा उबालने हेतु जलावन लकड़ी, पालीथिन बैग, कवकनाशी/कीटनाशी =रु.50/–
- =मजदूरी =–250/–
- कुल लागत=रु 470/–
- कुल मशरूम उत्पादन 8 किलोग्रम
- मशरूम का विक्री दर रु. 150/–किलोग्राम
- कुल आमदनी 8 • 150 =रु. 1200/–
- शुद्ध लाभ =1200–470=रु 730/–
- प्रति रुपया खर्च करके लाभ =2.55/–

एक भूमिहीन कृषक मामूली लागत 470/–रूपया खर्च करके मात्र 25 दिनों में 730/ कमा सकता है अर्थात घर बैठे 48/– प्रतिदिन के हिसाब से कमा सकता है।

रबी में अच्छी उपज लेने के गुर

गेंहू:–

- अधिक उपज देने वाली प्रजाति – HD 2967, HD 2824, HD 2733 DBW 39 की बुआई 25 नवम्बर तक संपन्न करे
- बिलम्ब से बोने के लिए अच्छी उपज देने वाली प्रजाति HI 1563 अथवा HD3118 का चुनाव करे
- बुआई 10नवम्बर से 25 नवम्वर तक सर्वोत्तम रहता है बिलम्ब की दशा में बुआई 15 दिसम्बर तक समाप्त हो जानी चाहिए।
- बुआई जीरो टिल मशीन से करने से खेत की तैयारी का खर्च बच जाता है साथ ही साथ बीज दर, सिंचाई के घंटे में भी वचत होती है।
- जीरो टील मशीन में 2 किलो ग्राम/कठा के हिसाब से डी ए पी का प्रयोग करना चाहिए मुरेट ऑफ पोटाश 1 किलोग्राम प्रति कठा के हिसाब से खेत में बिखेर देनी चाहिए।
- बिलम्ब की दशा में बीज की मात्रा सवा गुनी कर देनी चाहिए।
- यदि सिंचाई की सुविधा सीमित हो तो पहली सिंचाई 20–21 दिन पर, दूसरी सिंचाई गांठ बनने की अवस्था अर्थात 70–75 दिन पर तथा तीसरी दूध आने की अवस्था पर अर्थात 110–115 दिन पर करनी चाहिए
- बनरी खरपतवार के नियंत्रण के लिए टोटल नामक खरपतवारनाशक(सुल्फोसुल्फुरान. मेटसुल्फुरान)) का प्रयोग पहली सिंचाई के एक सप्ताह बाद अथवा बुआई के 30–35 दिन के अंदर कर देनी चाहिए

तोरी–सरसों

उन्नत प्रभेद–

तोरी–पी टी 313,भवानी, आर ए यू टी यस 17

राई–पूसा बोल्ड, राजेंद्र अनुकूल, बरुना

सरसों –राजेंद्र सरसों 1,,सवर्णा

बुआई–

अगेती–अक्टूबर के प्रथम सप्ताह

मुख्य– 10 अक्टूबर से 25 अक्टूबर

बीजोपचार–

2.5 ग्राम थिरम धकिलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करे

पोषक तत्व प्रवंधन–

सिंगल सुपर फासफेट अथवा 20:20:0:13 सल्फर

युक्त उर्वरक है इसका प्रयोग करना चाहिए इससे पौधे की फॉस्फोरस के साथ साथ गन्धक की आवश्यकता पूरी हो जाती है।

सिंचाई–

पहली –25–30 दिन बाद

दूसरी– दाना भरते समय

पौध सुरक्षा दृलाही एवं आरा माखी की रोकथाम के लिए मेटसिस्ताक्स 25 EC की 2मि ली/ली पानी में घोल बनाकर छिडकाव करे

मसूर

प्रजातियाँ – मल्लिका (के 75),पन्त 406,बी आर 25, डी पी एल 62 अधिक उपज देनेवाली उकठा अवरोधी है।

बीज शोधन – 2.5 ग्राम थिरम/किलो बीज के हिसाब से शोधन करे।

बीज दर – 500– ग्राम ध्कठा के हिसाब से 30 से.मी. की दूरी पर बुआई करे

राइजोबियम कल्चर से भी बीज उपचारित करे

उर्वरक–डी ए पी 2किलो/कठा, मुरेट आफ पोटाश 1किलो/कठा, 500 ग्राम/कठा सल्फर का प्रयोग आखिरी जुताई पर कर दे

गंधक (सल्फर) का प्रयोग दलहनी–तिलहनी फसलो में अवश्य करे–

नत्रजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश के बाद सल्फर को चौथे तत्व के रूप में स्वीकार किया गया है लेकिन इधर लगातार बहुत वर्षो से किसान भाई खेती में यूरिया एवं डी ए पी का ही प्रयोग करते आ रहे है जिससे नत्रजन तथा फॉस्फोरस की पूर्ति तो हो जाती है लेकिन अन्य आवश्यक तत्व नहीं मिल पाते है गंधक के प्रयोग करने से दलहन में प्रोटीन तथा तिलहनी फसलो में तेल की मात्रा तथा गुणवत्ता में सुधार होता है सयह तेल तत्व के संस्लेषण के साथ साथ प्याज–लहसुन एवं सरसों में तीखापन वद्धि करता है सगंधक की आवश्यकता लगभग फॉस्फोरस के बराबर होती है इसके प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ उत्पाद की गुणवत्ता भी बढती है। किसान भाई कम से कम 500 ग्राम ध्कठा के हिसाब से सल्फर आखिरी जुताई पर बुआई के पहले अवश्य डाले।

आवश्यक सूचना-

1. परिवर्तन किसान प्रांगन में जीरो टिल मशीन, मिटटी पलटने वाला हल, रिज प्लान्टर, रेज्ड बेड प्लान्टर उपलब्ध है किसान भाई इसे ले जाकर अपने खेत में प्रयोग कर सकते है।
2. पाली हाउस में तैयार किये गए संकर टमाटर, बैगन, फूल गोभी, पात गोभी मिर्च के पौध उपलब्ध है फलो में आम की आम्रपाली, दशहरी, गौरजीत, कपूरी यकागजी बेल, आंवला, इलाहबादी अमरुद के पौधे उपलबध है किसान भाई उचित मूल्य पर इन पौधों को प्राप्त कर सकते है।
3. परिवर्तन किसान क्लब में डी ए पी, यूरिया, मुरेट ऑफ पोटाश उर्वरक तथा विभिन्न प्रकार के कीटनाशी, फफूंद नाशी रसायन उपलब्ध है किसान भाई क्लब के सदस्य बनकर इनका लाभ उठाए
4. किसान क्लब की सदस्यता शुल्क मात्र 100/ वार्षिक है शुल्क के साथ एक पासपोर्ट साइज का फोटो जमा कर सदस्य बने।
5. हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र के तकनिकी सहयोग एवं कृषि बिभाग के सौजन्य से जीरो टिलेज से गेंहू की बुआई का प्रदर्शन किया जा रहा है किसान भाई इसका लाभ उठाएं।

कृषि अनुसंधान के झरोखे से -

- भारतीय कृषि वैज्ञानिको ने गेंहू की एक ऐसी किस्म तैयार की है जो मानव शरीर में जिंक की कमी को पूरा करेगी स जिंक की कमी से वच्चो का मानसिक एवं शारीरिक विकास रुक जाता है स इसकी पैदावार 22.5 कुंतलध्एकड़ दर्ज की गयी है फसल 150दिन में तैयार हो जाती है यह किस्म पंजाब समेत उत्तर पश्चिमी भारत मे ली जा सकती है बुआई का सही समय अक्टूबर का चौथा सप्ताह है इस नयी किस्म का नाम पी बी डब्लू वन जिंक है पंजाब कृषि विश्वविद्यालय ने 13 साल शोध के बाद इस किस्म को विकसित करने में सफलता पाई है।
  स्रोत–पटना 24 अक्टूबर, 2017, दैनिक जागरण
- विरसा कृषि विश्वविद्यालय रांची ने अरहर की एक नयी किस्म तैयार की है जो 107 दिन में पककर तैयार हो जाती है अब तक उपलब्ध किस्मो में साल में अधिकतम एक फसल ली जा सकती थी फसल तैयार करने में 240 दिन लगते थे सयह किस्म एक एकड़ में लगभग 8 कुंतल पैदावार देगी जल्दी ही यह किस्म किसानो के बीच उपलब्ध होगा इसकी खेती में लागत कम मुनाफा ज्यादा होगा।
  डॉ. डी एन सिंह, निदेशक अनुसंधान
  बिरसा कृषि विश्व विद्यालय, रांची

सहयोगी संस्थाएँ

सीरियल सिस्टम इनिसिएटीव् फॉर साऊथ एशिया पटना

वयोवार्सिटी इन्टरनेशनल फॉर साऊथ एशिया नई दिल्ली

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र पूसा, समस्तीपुर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद रिसर्च कॉम्पलेक्स पूर्वी क्षेत्र पटना

कृषि विभाग आत्मा एवं संबंधित विभाग, सिवान।

परिवर्तन PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास
नरेन्द्रपुर जीरादेई सिवान

संपर्क सूत्र
डा० अमरनाथ तिवारी
कृषि सलाहकार
+91 - 7759863367
amarnath.tewari@takshila.net

हाइब्रिड धान किसानो की पसंद बनी

वर्तमान खरीफ में लगभग 70 प्रतिशत किसानो के द्वारा संकर धान की खेती की गयी है परिवर्तन किसान क्लब से लगभग किसानो ने केवलं संकर धान का वीज लेकर रोपाई किया है इन संकर धानो में 27P63 काफी लोकप्रिय हुआ है यह 130–135 दिनों में तैयार हो जाती है तथा इसकी उपज भी 60–65/कठा तक प्राप्त हो जाती है तथा खाने में भी बहुत ही अच्छा है

किसानो के खेत पर 27 P 63संकर धान की फसल

किसानों की बातें, उनकी जुबानी

संबोधन

परिवर्तन से अरहर की उपास 120 प्रजाति जो लगभग 5 माह में पक जाती है घउसका वीज लाकर अपने खेत में बोया हूँ फसल में फूल आ रहा है फली भी लग रही है कीड़ो से बचाने के लिए मैंने दवा का छिडकाव भी करा दिया है हमें इस फसल में मक्के की अपेक्षा अधिक लाभ दिखाई दे रहा है क्योकि मक्के की तुलना में लागत कम लगती है तथा भाव भी ज्यादा मिलता है इसके काटने के बाद गेंहू की भी बुआई हो जाएगी जितना पैदावार होगी इसे बीज के लिए रखूँगा तथा लोगो को भी दे दूंगा लेकिन लोगो को कहूँगा की इसकी बुआई मध्य जून में कर दे जिससे गेंहूँ की बुआई के लिए समय से खेत खाली हो जाये

बशिष्ठ नारायण सिंह ,बडहुलिया टोला

मछली पालने का मुझे काफी शौक है पिछले साल मैंने परिवर्तन से मछली पालन की ट्रेनिंग लिया बहुत जानकारी मिली मछली को समय से खाना(सरसों की खली, ब्रान तथा एग्रोमिन पाउडर), पानी का लेबल बरकरार रखना ,समय–समय पर चुना का इस्तेमाल करना सबकी जानकारी विशेषज्ञों से मिली स इससे मुझे बहुत लाभ है स

रामेश्वर सिंह,भिखपुर

मशरूम की ट्रेनिंग 6 दिसम्बर को परिवर्तन में हुई मै तथा मेरे गाँव की स्वयं सहायता समूह की कुछ महिला कृषको ने

उसमे भाग लिया तथा वैज्ञानिको ने हम लोगो को गेंहू की भूसा को पानी में उसिंनकर, छाना गया स मशरूम का बीज हमलोगों से ही पॉकेट में डलवाकर सब चीज सिखाया गया हम लोगो को यह बहुत कामयाब लगा हम लोग परिवर्तन से मिल्कर मशरूम की खेती करेगे

आलोक भगत, बंथो श्रीराम

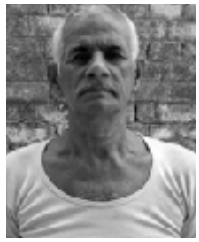

हमारे गाँव में पिछले साल जीरो टिलेज बिधि से गेंहू की बुआई कई लोगो ने की थी अरुण सिंह ने इसके लिए सब व्यवस्था कराये थे जमाव ठीक था पहले लोग नहीं समझते थे लेकिन बाद में फसल देखकर पूरा गाँव जीरो तिलज से गेंहू बोने के लिए तैयार हो गया अब हम लोग जीरो टिल मशीन से ही गेंहू की बुआई कराएँगे

शशि भूषण सिंह,सलाहपुर

मै ओम प्रकाश सथो का निवासी हूँ स मै परिवर्तन से गेंहू यच डी 2967 का वीज लेकर बोया था जिसका पैदावार 75 किलोप्रति कठा हुआ था बरसाती प्याज भी लगाया था जिसमे लागत कम तथा लाभ ज्यादा मिला था सअब धान की सीधी बुआई भी किसानो का चहेता बनता जा रहा है इसमें हम भी है परिवर्तन के पाली हाउस से सब्जी का पौधा बैगन, गोभी ,टमाटर , मिर्चा लाकर हम लोग लगाते है परिवर्तन हम लोगो के लिए बरदान साबित हो रहा है स

ओमप्रकाश ,सथो

परिवर्तन नरेन्द्रपुर ग्राम पंचायत के साथ ही साथ जीरादेई एवं आंदर प्रखंड के 44 गाँवों में क्रषि उत्पादन की बढोतरी के लिए अहम् भूमिका निभा रहा है परिवर्तन किसान क्लब किसानो की सुबिधा के लिए आवश्यक उन्नतशील किस्म के फसलो के वीज ,उर्वरक एवं कीटनाशको को समय से उपलब्ध कराने के लिए प्रयासशील है अब हम आगे और भी प्रयास करके अपने क्लब की व्यवस्था को मजबूत करेंगे स हम सभी किसानो की शुभकामनाये परिवर्तन के साथ बना रहेगा स

चंदेश्वर सिंह, अध्यक्ष, परिवर्तन किसान क्लब ,नरेन्द्रपुर

Design & Production : imagica graphics